तीसरा सप्ताह

१. सत्र की शुरुआत (पूर्वभूमिका)

हरि ॐ बच्चों, इस बार 22 सितम्बर से 2 अक्टूबर तक नवरात्रि है, साथ ही 23 सितम्बर को हमारे पूज्य सदगुरुदेव संत श्री आशारामजी बापू का आत्मसाक्षात्कार दिवस है। इसलिए आज का बाल संस्कार सत्र इन्हीं पर आधारित है। आज हम आपको बताएँगे कि यह दिन आत्मसाक्षात्कार दिवस हम साधकों के लिए, बापूजी के प्यारे बच्चों के लिए क्यों महत्वपूर्ण है और इस दिन पूज्य गुरुदेव हमें क्या कुंजी सिखाते है ? फिर बारी आयेगी कहानी की, जिसमें हम जानेंगे कि ऋषि के श्राप से राजा परीक्षित की 7 दिन में मृत्यु होनी थी परंतु उन सात दिनों में मृत्यु होने से पहले ही किस प्रकार ऐसा परीक्षित आत्मज्ञान पाकर मुक्त हो गए ? उसके बाद हम आपको बताएँगे कि नवरात्रि कि दिनों में क्या करना चाहिए ? इसके अलावा इस बार हम आपके लिए विशेष नई गतिविधि लेकर आए हैं कौनसे माताजी की कौनसी सवारी? और ज्ञान का चुटकुला, और अंत मे

सत्संग में सुनेंगे आत्म साक्षात्कार की पावन कहानी - पूज्य बापूजी की ज़ुबानी ।

तो आइये, पूज्य गुरुदेव का स्मरण करते हुए शुरू करते है आज का बाल संस्कार केंद्र -

२. प्राणायाम, जप, ध्यान

अब सभी बच्चे अपने स्थान पर खड़े होकर थोड़ी देर पंजों के बल उछलकूद करेंगे, जिससे शरीर और मस्तिस्क मे रक्त का अनुकूल प्रवाह बढ़ेगा और चुस्ती-फुर्ती मे मदद मिलेगी ।

बच्चों, अब सभी बच्चे अपने अपने स्थान पर बेठ जाएंगे, कमर सीधी, ज्ञान मुद्रा में 'हरि ॐ' का गुंजन करेंगे।

अब सभी अनामिका उँगली से तिलक के स्थान पर स्पर्श करते हुए मंत्र बोलेंगे और हाथ जोड़कर पूज्य सद्गुरुदेव की प्रार्थना करेंगे -

https://youtu.be/7yMWmhcJXRI

ॐ गं गणपतये नमः,

ॐ श्री सरस्वत्यै नमः,

ॐ श्री गुरूभ्यो नमः

अब हम सभी बच्चे भगवती सरस्वती की वंदना करेंगे -
(लिंक :- https://youtu.be/DySzqHwNCxU)

बच्चों, अब हम सब त्राटक करेंगे। त्राटक से हमारी एकाग्रता और याद शक्ति बढ़ती है ।
https://youtu.be/XxWfEjHbqCI

3) आओ सुनें कहानी

कहानी : राजा परीक्षित को ब्रह्मज्ञान

बच्चों, द्वापर युग की समाप्ति और कलयुग के आरंभ का समय था । उस समय पांडवों में अर्जुन के पोते और अभिमन्यु के पुत्र परीक्षित का राज्य था । वे बड़े ही धर्मात्मा वीर और प्रतापी राजा थे । एक बार राजा परीक्षित शिकार करने वन में गये । वहां उनको प्यास लगी । वे पानी की खोज में घूमते घूमते शमीक ऋषि के आश्रम में पहुँच गये । उस समय ऋषि समाधि में लीन थे । परीक्षित ने उनसे पीने के लिए पानी माँगा ।

परीक्षित - हे ऋषिवर, हमें बहुत प्यास लगी है क्या हमें पीने के लिए पानी मिलेगा ?

सूत्रधार : परीक्षित ने अपने वचन तीन-चार बार दोहराए, लेकिन ऋषि समाधि में लीन थे । परीक्षित की बुद्धि पर कलयुग का प्रभाव आ गया था, इसलिए राजा ने सोचा...

परीक्षित - ये ऋषि तो ध्यान करने का ढोंग कर रहे हैं । मैं कब से पानी मांग रहा हूं पर ये तो सुन ही नहीं रहे, बस ध्यान का ढोंग करके बैठे हुए हैं ।

सूत्रधार : परीक्षित ने क्रोध में आ कर पास की झाड़ियों में पड़े एक मरे हुए सांप को तीर से उठाकर ऋषि के गले में डाल दिया और आश्रम से चले गए. परन्तु ऋषि के पुत्र ने दूर से राजा परीक्षित को जाते हुए देख लिया. जब ऋषि कुमार आश्रम में पहुंचे और साधना में लीन बैठे पिता के गले में मरा हुआ सांप देखा तो ऋषि पुत्र को क्रोध आ गया । उसने हाथ में जल लेकर राजा को श्राप देते हुए कहा,

ऋषि कुमार - मेरे पिताश्री का अपमान करने वाले राजा परीक्षित की मृत्यु आज से 7 दिन के बाद नागराज तक्षक के काटने से ही होगी ।

सूत्रधार : इतने में ऋषि की समाधी टूट गई, सारी बात जान कर उन्होंने कहा,

शमीक ऋषि- राजा परीक्षित श्राप के योग्य नहीं थे, वह एक प्रजापालक राजा है, कलयुग के प्रभाव के कारण उनसे ऐसा कार्य हो गया है ।

सूत्रधार : उन्होंने तुरंत ही अपने एक शिष्य को राजा परीक्षित के पास जाकर श्राप की सूचना देने को कहा । राजधानी पहुंचने पर राजा परीक्षित को अपने किए हुए कर्म के लिए बड़ा पश्चाताप होने लगा । इतने में ही ऋषि का शिष्य वहां आ पहुंचा, और कहने लगा -

ऋषि का शिष्य- हे राजन, ऋषि पुत्र ने आपको आज से 7 दिन के बाद मृत्यु का श्राप दे दिया है, उनका यह श्राप असत्य नहीं होगा, अत: आप अपने उद्धार का उपाय करें ।

सूत्रधार : तब राजा परीक्षित ने अपने पुत्र जन्मेजय को राज्य का कार्य भार सौंप दिया और स्वयं गंगा के किनारे अनसन करके कुशा के आसन पर बैठ गए और भगवान श्री कृष्ण का ध्यान करने लगे । उस समय वहां अद्भुत घटना घटी, उस काल के सभी ऋषि मुनि तपस्वी योगी उस स्थान पर आ गए जहां परीक्षित बैठे हुए थे । परीक्षित ने एक-एक करके सभी के चरणों में प्रणाम किया और सभी से श्री कृष्ण की अनन्य भक्ति का आशीर्वाद मांगा । सभी ऋषि मुनि वही भूमि पर आसन बिछाकर विराजमान हो गए.. और ठीक उसी प्रकार इंतजार करने लगे

जैसे हम लोग सत्संग भवन में बैठकर व्यास पीठ की ओर निहारते हुए गुरुदेव के आने की प्रतीक्षा करते हैं । इतने में वहां पर भगवान वेदव्यास जी के पुत्र शुकदेव जी महाराज प्रकट हो गए । उनकी आयु मात्र 16 वर्ष की थी, उनकी छवि बडी ही मनोहर और अंग अत्यंत सुकुमार थे । उन्हें देखते ही सभी ऋषि मुनियों ने खड़े होकर उनका बडे आदर से सम्मान किया । राजा परीक्षित ने भी उन्हें दंडवत प्रणाम किया । फिर उन्हें ऊँचे श्रेष्ठ आसन पर विराजमान कर उनके श्री चरणों का अभिषेक किया और चरणामृत का पान किया । फिर राजा परीक्षित नीचे बैठकर हाथ जोड़कर प्रार्थना करने लगे ।

परीक्षित - हे ब्रह्मस्वरूप भगवान, हम अपराधी है, फिर भी आपने हमें दर्शन दिए । मेरे पर भगवान श्री कृष्ण की विशेष कृपा है कि आप जैसे परम सिद्ध महापुरुष स्वयं मेरा उद्धार करने यहाँ पधारें है । आप योगियों के परम गुरु है, इसलिए मैं आपसे यह प्रश्न कर रहा हूं कि जिस पुरुष की मृत्यु नजदीक हो उसको क्या करना चाहिए?

शुकदेव जी- परीक्षित यह प्रश्न सभी मनुष्यों के लिए बहुत ही उत्तम है । मृत्यु का समय आने पर मनुष्य सभी संबंधियों के प्रति ममता को त्याग कर वैराग्य धारण करें, मन को विषयों से हटा ले और भगवान की कथाओं का श्रवण करें, ऐसा करने से अवश्य परम गति प्राप्त होगी । परीक्षित, मैं तुम्हें श्रीमद्

भागवत महापुराण में भगवान नारायण की लीलाओं की कथा सुनाता हूं जिसे सुनकर तुम अपने हृदय पर धारण करो ।

सूत्रधार : सुकदेव जी महाराज ने श्रीमद् भागवत सुनाना आरंभ किया, जिसमें कृष्ण, राम, नरसिंह, वामन, आदि अवतारों और लीलाओं का वर्णन किया । पुरे 7 दिन तक भागवत कथा चलती रही । परीक्षित सहित समस्त ऋषि मुनि श्रीमद् भागवत कथा का दिव्य आनंद लेते हुए अपने हृदय में धारण करने लगे । राजा परीक्षित का चित्त भगवत भाव से सराबोर और हो गया था । तब सुकदेव जी महाराज ने उन्हें ब्रह्मज्ञान का उपदेश दिया । कैसी है भारत की अनुपम संस्कृति, 60 वर्ष के राजा परीक्षित ने 16 वर्ष के बालक सुकदेव जी को गुरु रूप में स्वीकार कर अपने वास्तविक स्वरूप का, ब्रह्म और आत्मा की एकता का साक्षात्कार कर लिया ।

देह सभी मिथ्या हुई, जगत हुआ निस्सार।
हुआ आत्मा से तभी, अपना साक्षात्कार।।

तब राजा परीक्षित कहने लगा

परीक्षित - भगवन, अब मैं परम शांति स्वरूप ब्रह्म में स्थित हूं. मुझे तक्षक के काटने का कोई भय नहीं है, अब मुझे आज्ञा दीजिए कि मैं मौन हो जाऊं ।

सूत्रधार :- सुकदेव जी ने स्वीकृति दी । राजा परीक्षित संसार के समस्त कामनाओं से रहित, ईश्वर के स्वरूप में पूर्णतया विलीन हो गए ।

उसी समय भयंकर विशाल सर्पों का राजा तक्षक वहां प्रकट हो गया और क्षण भर में राजा परीक्षित को डस लिया । राजा परीक्षित तो पहले से ही ब्रह्म में स्थित हो चुके थे, तक्षक के विष के कारण उनका पूरा शरीर सबके सामने जलकर भस्म हो गया । तब आकाश पृथ्वी और सब दिशाओं में बड़े जोर की ध्वनि होने लगी, देवताओं की धुन्धुबियाँ बज उठी, गंधर्व और अप्सराएँ गान करने लगी, देवता लोग साधु साधु के नारे लगाकर पुष्पों की वर्षा करने लगे और इस प्रकार राजा परीक्षित ने 7 दिन में मृत्यु आने से पहले ही जन्म और मृत्यु से पार हो गए । अपने भीतर ही यह अनुभव कर लिया ।

परीक्षित - मरने वाला यह शरीर है, मैं नहीं, मैं इस शरीर से परे अमर आत्मा हूँ, परम स्वतंत्र, शांत और अनश्वर हूँ ।

परम स्वतंत्र पुरुष दर्शाया, जीव गया और शिव को पाया ।
जान लिया हूँ शांत निरंजन, लागू मुझे न कोई बंधन ।।

यह जगत सारा है नश्वर, मैं ही शाश्वत एक अनश्वर ।
सभी बच्चे जोर से बोलेंगे सतगुरु देव भगवान की जय...

4. साखी :

आसोज सुद दो दिवस, संवत् बीस इक्कीस ।
मध्याह्न ढाई बजे, मिला ईस से ईस ।।
देह सभी मिथ्या हुई, जगत हुआ निस्सार ।
हुआ आत्मा से तभी, अपना साक्षात्कार ।।

5. ज्ञान का चुटकुला

टीचर - पिंकी, तुम तीन दिन से स्कूल क्यों नहीं आयी?

पिंकी - वो मैं गाँव गई हुई थी ।

टीचर - फिर तुमने छुट्टी कि एप्लीकेशन क्यों नहीं दी और किसी को बताया भी नहीं?

पिंकी - लेकिन मैने तो फेसबुक पर स्टेटस अपडेट कर दिया था, और आपको और प्रिंसिपल मेम को टैग भी किया था ।

सीख - मोबाइल और सोशल मीडिया पर अधिक समय बिताना खतरनाक होता है, इनसे दूर ही रहना चाहिए ।

6. संस्कृति सुवास

साक्षात्कार दिवस विशेष

बच्चों ! 23 सितम्बर को हमारे पूज्य गुरुदेव संत श्री आशारामजी बापू का आत्मसाक्षात्कार दिवस है । पूज्य बापूजी कहते हैं, जन्म-दिन, शादी की वर्षगाँठ, मृत्यु की पुण्यतिथि रोज लाखों-करोड़ों लोगों की होती है, लेकिन आत्मसाक्षात्कार दिवस तो धरती पर कभी-कभी कहीं कहीं किसी विरले ब्रह्मवेत्ता महापुरुष का ही होता है । आज ईश्वर से मिलन का दिवस है, मेरे गुरूदेव के विजय का दिवस है, मेरे गुरूदेव के दान का दिवस है, गुरूदेव के पूरे बरसने का दिवस है । आज वह पावन दिवस है जब जीवात्मा सदियों की अधूरी यात्रा पूरी करने में सफल हो गया । जीवमात्र यही चाहता है कि मेहनत थोड़ी करूँ और सुख ज्यादा मिले और वह सुख स्थायी हो । अपना-आपा ही ऐसी चीज है जो बिना मेहनत के मिलता है और एकबार मिल जाय तो फिर कभी नहीं जाता । इसी को बोलते हैं आत्म-साक्षात्कार । आत्मसाक्षात्कार करना ही मनुष्य जीवन का

एकमात्र उद्देश्य है। अगर पापी है तो नरकों में या पशुयोनि में आयेगा, पुण्यात्मा है तो स्वर्ग में या अच्छे घर में आयेगा, लेकिन साक्षात्कार होने के बाद जन्म मरण का अंत हो जाता है । चाहे कोई कितनी भी सिद्धियाँ पा ले, भगवान राम, श्रीकृष्ण, शिवजी के साथ बातचीत कर ले, शिवलोक या विष्णुलोक में रहने को भी मिल जाय फिर भी साक्षात्कार के बिना यात्रा अधूरी रहती है । आज तो आप लोग भी मुझे साक्षात्कार-दिवस की खूब मुबारकबादी देना, इससे आपका हौसला बुलंद होगा । इस महान से महान दिवस पर साधकों के लिए एक उत्तम तोहफा यह है कि आप अपने दोनों हाथों की उँगलियों को आमने सामने करके मिला दें। होंठ बंद करके जीभ ऐसे रखें कि न ऊपर लगे न नीचे, बीच में रखें। फिर कुछ समय श्वासोच्छवास की गिनती करें जिससे मन एकाग्र होने लगेगा, शक्ति का संचय होने लगेगा । फिर जीव-ब्रह्म की एकता का संकल्प करके उसमें शांत हो जायें । यह अभ्यास प्रतिदिन करें, धीरे-धीरे इस अभ्यास को बढ़ाते जायेंगे तो आत्मा में स्थिति हो जायेगी । जीवन की शाम होने के पहले साक्षात्कारी महापुरूषों की कृपा की कुंजी से साक्षात्कार कर लेना चाहिए ।

7. क्विज़

अब बारी है ज्ञान-विज्ञान प्रतियोगिता की ।

आपको एक प्रश्न पूछा जाएगा, उत्तर में चार विकल्प होंगे और आपको 10 सेकंड में सही उत्तर बताना है ।

प्रश्न है- **“**श्रीमद भगवद गीता के अनुसार आत्मज्ञान के लिए कौनसे तीन मार्ग है**?**”

(A) विषादयोग, समत्वयोग, कर्मयोग

(B) ज्ञानयोग, कर्मयोग, भक्तियोग

(C) a और b दोनों सही

(D) a और b दोनों गलत

प्रश्न का सही उत्तर आपको सत्र के अंत में बताया जायेगा ।

8. क्या करें क्या नहीं ?

नवरात्रि में क्या करें क्या ना करें -

बच्चों, इस वर्ष 22 सितम्बर से 2 अक्टूबर तक नवरात्रि है । क्या आपको पता है हम नवरात्रि क्यों मनाते हैं, और नवरात्रि में क्या करना चाहिए?

- नवरात्रि के प्रथम तीन दिन माँ काली की उपासना के होते हैं, जिसमे अपने काले कर्मो की निवृति के लिए जप किया जाता है ।
- नवरात्रि के दूसरे ३ दिन लक्ष्मी की उपासना के होते है, ताकि हम सफल सम्पदा के अधिकारी बनें ।
- आखिरी ३ दिन सरस्वती की उपासना के होते हैं, ताकि हमारे जीवन में प्रज्ञा ज्ञान का अर्जन हो ।
- नवरात्रि के दिनों में विद्यार्थियों को सारस्वत्य मंत्र का अनुष्ठान करना चाहिए, और सूर्य नारायण का ध्यान करना चाहिये ।
- गायत्री मंत्र का पाठ करते हुए भगवान को खीर या चावल के हलवे का भोग लगाना चाहिए.
- खीर की 21 या 51 आहुति देते हुए हवन करना चाहिए।
- नवरात्रि के दिनों में 'ॐ श्रीं ॐ ' मंत्र का जप करना चाहिए।

- जिनके घर में धन संबंधी तकलीफ है उनको रात्रि के समय दीपक जलाकर इस मंत्र का जप करना चाहिए -
  "ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं कमल वासिन्ये स्वाहा"

9) भजन

अब हम सभी ब्रह्मभाव को दर्शाने वाले निर्वाण षट्कम का पाठ करेंगे- चिदानंद रूपः शिवोहम शिवोहम
https://youtu.be/ZNxBk4T7q_8

10) गतिविधि

आज की गतिविधि में बच्चे ये बतायेंगे किस माता की कौनसी सवारी?

1. माँ वैष्नौदेवी
2. माँ सरस्वती
3. माँ लक्ष्मी
4. माँ कालरात्रि
5. माँ शैलपुत्री
6. माँ चंद्रघंटा
7. माँ महागौरी

बाघ

उल्लू	गधा
राजहंस	वृषभ
गाय	सिंह

11. श्री आशारामायण पाठ

बच्चों, अब हम श्री आशारामायण की कुछ पंक्तियां दोहराएंगे ।

https://youtu.be/bl57Gh3T4ps

12. सत्संग श्रवण

अब हम पूज्य बापूजी के श्री मुख से सत्संग में सुनेंगे-

आत्म साक्षात्कार की पावन कहानी- पूज्य बापूजी की ज़ुबानी

https://youtu.be/F8_5BOp5uU4

13. प्रश्नोत्तरी

तैयार हो जाइए प्रश्नोत्तरी के लिए -

- आत्म साक्षात्कार दिवस क्यों सबसे खास दिवस होता है?

- मनुष्य जीवन का उद्देश्य आत्म साक्षात्कार करना क्यों होता है?
- पूज्य गुरुदेव आत्मा में स्थिति पाने का क्या उपाय बताते हैं?
- राजा परीक्षित कौन थे?
- राजा परीक्षित ने ऋषि के गले में मरा हुआ सांप क्यों डाल दिया?
- राजा परीक्षित ने जब श्राप के बारे में सुना तो उन्होंने क्या किया?
- जब मृत्यु पास हो तो मनुष्य को क्या करना चाहिए?
- सुकदेव जी महाराज ने राजा परीक्षित को भागवत कथा क्यों सुनाई?
- राजा परीक्षित को आत्म साक्षात्कार कैसे हुआ?
- आज की कहानी से हमें क्या शिक्षा मिलती है?
- नवरात्र के दिनों में किस मंत्र का जप करना चाहिए?
- नवरात्रि में क्या करना चाहिए?
- आज के सत्संग से हमें क्या शिक्षा मिलती है
- आत्म साक्षात्कार होना क्यों बड़ी बात है?

14. पूर्णाहूति

<u>दीपज्योति एवं आरती</u>

सभी बच्चे अपने अपने स्थान पर आरती के लिए खड़े हो जाएंगे।

प्रार्थना :

ॐ असतो मा सद्गगमय,
तमसो मा ज्योतिर्गमय,
मृत्योर्मामृतं गमय ॥
ॐ शान्ति शान्ति शान्तिः

हे ईश्वर, हमें असत्य से सत्य की ओर ले चलो, अन्धकार से प्रकाश की ओर ले चलो, मृत्यु से अमरता की ओर ले चलो ।

नारायण नारायण नारायण नारायण ।

इसी के साथ हमारा आज का बाल संस्कार केंद्र संपन्न होता है अगले सप्ताह फिर मिलेंगे बच्चो ! एक नए ज्ञानवर्धक विषय के साथ। तब तक के लिए हरि ॐ !!!

- **ज्ञान-विज्ञान प्रतियोगिता प्रश्न का सही उत्तर है ।**

उत्तर: **(B)** ज्ञानयोग, कर्मयोग, भक्तियोग

- **गतिविधि के जवाब :-**

1. माँ वैष्नौदेवी	बाघ
2. माँ सरस्वती	राजहंस
3. माँ लक्ष्मी	उल्लू
4. माँ कालरात्रि	गधा
5. माँ शैलपुत्री	गाय
6. माँ चंद्रघंटा	सिंह
7. माँ महागौरी	वृषभ

चौथा सप्ताह

१. सत्र की शुरुआत (पूर्वभूमिका)

हरि ॐ बच्चों !! आज के अध्याय में हम मिलारेपा के जीवन पर आधारित श्रृंखला को आगे बढ़ते हैं पिछले सत्र में हमने जाना कि संत मारपा ने मिलारेपा को अकेले मकान बनाने की सेवा दी, परन्तु आधा बनने के बाद ही उसे वापस तुड़वा दिया । फिर उसे अकेले पहाड़ पर मकान बनाने को कहा अकेले निर्माण का काम करते-करते मिलारेपा के शरीर पर घाव हो गए । तब गुरु माता ने गुरु मारपा से प्रार्थना की कि उसे

आसान सेवा दी जाए । फिर आगे क्या हुआ, यह हम जानेंगे आज की कहानी में ।

फिर संस्कृति सुवाष में आज हम जानेंगे नवरात्री के उत्तम जागरण के बारे में । उसके बाद हम आपको बतायेंगे दशहरे के दिन क्या करना चाहिए? इसके अलावा ज्ञान का चुटकुला, ज्ञान विज्ञान प्रतियोगिता प्रश्न, भजन, और अंत मे पूज्य बापूजी के श्री मुख से सत्संग में सुनेंगे अधर्म पर धर्म की विजय - तो आइये, पूज्य गुरुदेव का स्मरण करते हुए शुरू करते है आज का बाल संस्कार केंद्र !

२. प्राणायाम, जप, ध्यान

कीर्तन- अब हम कीर्तन करते हुए अपने स्थान पर खड़े होकर थोड़ी देर नृत्य करेंगे ।

https://youtu.be/7yMWmhcJXR

बच्चों, अब हम मंत्रोच्चारण और स्तुति करेंगे। सभी बच्चे अनामिका उँगली से तिलक के स्थान पर स्पर्श करते हुए मंत्र बोलेंगे ।

ॐ गं गणपतये नमः, ॐ श्री सरस्वत्यै नमः,

ॐ श्री गुरूभ्यो नमः

अब सभी बच्चे करेंगे "ॐकार" गुंजन

https://youtu.be/IpaxAhv-9LM (2 मिनिट)

बच्चों, अब हम सब त्राटक करेंगे। त्राटक से हमारी एकाग्रता और याद शक्ति बढ़ती है ।

https://youtu.be/XxWfEjHbqCI (1 मिनिट चलायें।)

3. आओ सुनें कहानी

कहानी - मिलारेपा का गुरु से छल

सूत्रधार : एक दिन गुरु मारपा की धर्मपत्नी को मिलारेपा की स्थिति देखकर दया आ गई । उन्होंने गुरु मारपा से कहा,

गुरु माता- स्वामी, इतने छोटे से बच्चे से इतना कठोर बर्ताव कर रहे हैं यह उचित नहीं है, उसका सारा शरीर लहूलुहान हो

गया है, जगह जगह छाले पड़ गए है । मुझे उसकी स्थिति देखी नहीं जाती ।

गुरु मारपा - देवी, गुरु जानता है कि उसे शिष्य के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए । मिलारेपा ने तंत्र विद्या से कई हत्यांए की है, तुम्हारे जैसी हजार माताएं मिलारेपा के ऊपर अपनी ममता लुटा दे तो भी उसे पाप से मुक्त नहीं कर सकती, जबकि मेरे कठोर रहने में ही उसकी उन्नति है । इसलिए गुरु और शिष्य के बीच में हस्तक्षेप मत करो, इसी में उसकी भलाई है ।

सूत्रधार : मिलारेपा अपने शरीर के कष्टों की परवाह नहीं करते हुए पहाड़ पर मकान बनाता रहा । पूरे चार वर्षो की अथक मेहनत से पहाड़ पर मकान बनकर तैयार हुआ । उसका शरीर बुरी तरह कमजोर और छालों और घाव से भर गया था । इतने में गुरु मारपा वहां मकान देखने आ गए, मकान देखकर वो बोले

गुरु मारपा - ठीक है, ऐसे का ऐसा एक और मकान यहाँ बना दे ।

सूत्रधार : यह कह कर गुरु मारपा चले गए ।

मिलारेपा के शरीर में इतनी ताकत नहीं बची की एक पत्थर भी उठा पाए, एक मकान और कैसे बनाएगा । वह किसी कोने में दुबक कर बेठ गया और सिसकियाँ भरने लगा ।
थोड़ी देर में गुरु माता वहां आ गई । उन्होंने मिलारेपा को रोते हुए देखा तो वह समझ गई कि क्यों रो रहा है ।
गुरु माता ने कहा:

गुरु माता- पुत्र कल गुरु मारपा सत्संग और दीक्षा का कार्यक्रम कर रहे हैं, तो तुम भी उन सत्संगियों के साथ दीक्षा कार्यक्रम में बैठ जाना और गुरु मंत्र की दीक्षा लेकर अपनी साधना आरम्भ करना ।

सूत्रधार : गुरु माता की बात सुनकर उसे संतोष हुआ. अगले दिन गुरु माता ने मिलारेपा को एक माखन और वस्त्र गुरु मारपा को भेंट करने के लिए दिया और बोला -

गुरु माता- बेटा, सत्संग में दीक्षा के लिए बैठ जा और अंत में गुरुदेव को अर्पण कर देना । मिलारेपा सत्संग भवन की ओर बढ़ने लगा तो मार्ग में लोगों ने उसे पहचान लिया और आपस में बात करने लगे कि

लोग - ‘अरे यह तो महान तांत्रिक मिलारेपा है, इसके पास तो बहुत सारी सिद्धियां हैं, इसके तो कई शिष्य हैं, यह तो तंत्र विद्या का महान विद्वान है ।

सूत्रधार : लोगों के मुख से इस प्रकार की बातें सुनकर मिलारेपा को अहंकार आ गया कि अभी भी लोगों में उसके और उसकी शक्तियों की चर्चा होती है ।
सत्संग शुरू हुआ, गुरु एक-एक करके सबको अपने पास बुलाते और उन्हें स्पर्श करके मंत्र दीक्षा देते, उनसे भेंट भी स्वीकार करते । फिर मिलारेपा की बारी आई वो जेसे ही गुरु के पास गया तो गुरु ने पूछा :

गुरु मारपा - अरे तू यहां क्यों आया है?

मिलारेपा - गुरुदेव मैं दीक्षा लेना चाहता हूं, मुझे भी दीक्षा प्रदान करें ।

सूत्रधार : गुरुदेव समझ गए कि इसके मन में लोगों की बातें सुनकर यह अहंकार आ गया है कि मैं बहुत बड़ा सिद्ध तांत्रिक हूं और ब्रह्मविद्या पाकर सर्वश्रेष्ट होना चाहता है ।
इसलिए बोले -

गुरु मारपा - तुम्हे जो सेवा कार्य सौंपा है वो तो तुमसे किया नहीं जाता और बड़ा आया दीक्षा पाने और ये जो तुम मक्खन और वस्त्र लाये हो यह तो मुझे सुबह ही किसी ने भेंट किया है, ये मेरी ही वस्तुए है, जाओ यहाँ से और जो सेवा तुम्हे दी है वो पूरी करो ।

सूत्रधार : गुरुदेव ने सब लोगों के सामने मिलारेपा को बहार निकाल दिया ताकि उसके अहंकार का नाश हो जाए ।

सूत्रधार : मिलारेपा गुरु माता के पास गया और रोते हुए कहने लगा -

मिलारेपा - माता, मुझे यहाँ गुरु की आज्ञा में सेवा करते हुए कई वर्ष हो गए है, फिर भी गुरुदेव ने मुझे ना तो दीक्षा दी ना ही मेरी सेवा से वो प्रसन्न हुए । शायद उन्होंने निश्चय कर लिया है कि वो मुझे ब्रह्मविद्या नहीं देंगे तो यहाँ रहने से क्या लाभ ? मैं अपनी माँ के पास चला जाता हूँ, मुझे अपनी माँ की याद आ रही है ।

सूत्रधार : गुरु माता ने उसे अपने हृदय से लगा लिया और कहने लगी पुत्र -

गुरु माता- मैं तेरी मेहनत को विफल नहीं होने दूंगी, तुम घर मत जाना, यदि गुरु मारपा तुम्हे स्वीकार नहीं कर रहे हैं तो मैं तुम्हे एक दुसरे संत के पास भेज देती हूँ जो तुम्हे साधना के मार्ग पर आगे ले जा सकते है ।

सूत्रधार : यह कहकर गुरु माता चुपके से मिलारेपा को गुरु मारपा के कमरे में लेकर गयी और उनकी तिजोरी खोली और उसमें से रत्न जडित हार, एक कागज कलम और मुहर निकल ली । कागज में गुरु मारपा की ओर से पत्र तैयार किया, उसमे लिख दिया - “आने वाले व्यक्ति को ब्रह्मविद्या की साधना सिखाई जाये, आज्ञा का पालन हो” और नीचे हस्ताक्षर की जगह पर गुरु मारपा की मुहर लगा दी । पत्र को रेश्मे कपडे में लपेट कर रत्न जडित हार के साथ मिलारेपा को थमा दिया और कहने लगी -

गुरु माता- यह हार गुरु मारपा को उनके गुरुदेव ने दिया है । यहाँ से पूर्व दिशा की ओर एक पर्वत पर एक संत का आश्रम है, वो गुरु मारपा के ही शिष्य है, उन्होंने गुरु मारपा से ब्रह्मविद्या

पा ली है, अब वो भी गुरुपद में प्रतिष्ठित हो गए है, तुम उन्हें ये पत्र जाकर देना और यह रत्न जडित हार भी देना जिसको देखकर उनको यह विश्वास हो जायेगा कि तुम्हे गुरु मारपा ने ही भेजा है और वो तुमको स्वीकार कर लेंगे । उनके सानिध्य में तुम आगे की साधना करना ।

सूत्रधार : मिलारेपा तो खुशी से उछल पड़ा, उसने गुरुमाता से वो वस्तुए ली, उनको प्रणाम किया और खिड़की से कूद कर पूर्व दिशा की ओर भागने लगा । मिलारेपा अपने गुरु की आज्ञा लिए बिना ही गुरु के अनुशासन की बेडी को तोड़ कर, गुरु माता से मिलकर गुरु के साथ ही छल करके गुरु का द्वार छोड़ कर चल पड़ा ।

सूत्रधार : बच्चों, पूज्य बापूजी कहते है, गुरु कुम्हार की तरह होते है, जैसे कुम्हार कच्ची मिटटी का घड़ा बनाता है तो बाहर से मिटटी को गोल करने के लिए थाप लगता है, परन्तु अन्दर हाथ रखता है । ऐसे ही गुरु बाहर से तो बड़े कठोर होते है, परन्तु भीतर से वो ही शिष्य की रक्षा करते है ।

गुरु का द्वार छोड़ कर जाना और गुरु से छल-करना माने अपने को ही चोरासी लाख योनियों के खाई में गिराना है ।

गुरु कुम्हार शिष्य कुंभ है, गढि गढि काढैं खोट।

अंतर हाथ सहार दै, बाहर बाहै चोट।।
गुरु आज्ञा लै आवही, गुरु आज्ञा लै जाय।
कहै कबीर सो सन्त प्रिय, बहु विधि अमृत पाय।।
गुरु शरणगति छाडि के, करै भरोसा और।
सुख संपती को कह चली, नहीं नरक में ठौर।।
गुरु आज्ञा मानै नहीं, चलै अटपटी चाल।
लोक वेद दोनों गये, आये सिर पर काल।।

फिर आगे मिलारेपा का क्या हुआ क्या? यह हम जानेंगे अगले सत्र की कहानी में ।

सभी बच्चे जोर से बोलेंगे - सदगुरुदेव भगवान जी की जय।

4. श्लोक :-

या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥

5. ज्ञान का चुटकुला

पिंकी की नई-नई शादी होती है, वो अपने ससुराल में जाती है ।

सास - बहु, इसे अपना ही घर समझना । कुछ पता नहीं हो तो पूछ लेना ।

पिंकी - माँजी, वाईफाई का पासवर्ड क्या है?

सीख: मोबाइल फोन और इन्टरनेट से यथासंभव दूर रहकर महत्वपूर्ण कार्यों पर एकाग्रता रखनी चाहिए ।

6. संस्कृति सुवास :-

नवरात्रि का जागरण

नवरात्र पर उत्तम जागरण वह है, जिसमें

(1) शास्त्र-अनुसार चर्चा हो

(2) दीपक हो

(3) भक्तिभाव से युक्त माँ का कीर्तन हो

(4) वादय्, ताल आदि से युक्त सात्विक संगीत हो

(5) प्रसन्नता हो

(6) सात्विक नृत्य हो, ऐसा नहीं कि डिस्को या अन्य कोई पाश्चात्य नृत्य किया ।

(7) माँ जगदम्बा पर नजर हो, ऐसा नहीं कि किसी को गंदी नजर से देखा ।

(8) मनोरंजन सात्विक हो, रस्साकशी,लाठी-खेल आदि कार्यक्रम हों ।

7. गतिविधि

दशहरे के दिन शाम को घर पर ही स्नान आदि करके, दिन के कपड़े बदल के शाम को धुले हुए कपड़े पहनकर ज्योत जलाकर बैठ जाएँ । थोडा " राम रामाय नम: " मंत्र जपते…

विजयादशमी है ना तो रामजी का नाम और फिर मन-ही-मन गुरुदेव को प्रणाम करके 'गुरुदेव सर्व सिद्धिदायी विजयकाल चल रहा है… हम विजय के लिए ये मंत्र जपते हैं - "ॐ अपराजितायै नमः "

ये मंत्र की १ - २ माला जप करना और इस काल में श्री हनुमानजी का सुमिरन करते हुए इस मंत्र की एक माला जप करें :-

“पवन तनय बल पवन समाना, बुद्धि विवेक विज्ञान निधाना । कवन सो काज कठिन जग माहि, जो नहीं होत तात तुम पाहि ॥”

8. क्या करें क्या न करें ?

दशहरे के दिन क्या करें क्या ना करें :-

दशहरा के दिन शाम को जब सूर्यास्त होने का समय और आकाश में तारे उदय होने का समय हो वो ‘सर्वसिद्धिदायी विजय काल’ कहलाता है ।

उस समय घूमने-फिरने मत जाना । दशहरा मैदान मत खोजना ... रावण जलता हो देखकर क्या मिलेगा ? धूल उड़ती होगी, मिटटी उड़ती होगी, रावण को जलाया उसका धुआं वातावरण मे होगा .... गंदा धुआं श्वास में लेना .... धूल, मिटटी श्वास में लेना पागलपन है ।

‘पवन तनय बल पवन समाना’ की भी १ माला कर लें उस विजय काल में, फिर गुरुमंत्र की माला कर लें । फिर देखो अगले साल के दशहरा तक गृहस्थ में जीने वाले को बहुत-बहुत अच्छे परिणाम देखने को मिल सकते हैं ।

9. क्विज़

अब बारी है ज्ञान-विज्ञान प्रतियोगिता की । आपको एक प्रश्न पूछा जाएगा, उत्तर में चार विकल्प होंगे और आपको 10 सेकंड में सही उत्तर बताना है।

प्रश्न है- “नारद जी ने ध्रुव को भगवान नाम का कौन सा मंत्र दिया था?

a. मरा मरा
b. ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
c. ॐ नमो नारायणाय
d. ॐ नमः शिवाय

प्रश्न का सही उत्तर आपको सत्र के अंत में बताया जायेगा।

10. भजन

अब हम गाएंगे एक भजन :- आशाओं के राम, मेरे साईं आशाराम...

https://youtu.be/eA9ANV6-U2s

11. श्री आशारामायण पाठ

बच्चों, अब हम श्री आशारामायण की पंक्तियां दोहराएंगे ।

https://youtu.be/bI57Gh3T4ps

(कुछ पंक्तियों का पाठ करवाएं।)

12. सत्संग श्रवण

सत्संग - अब हम पूज्य बापूजी के श्रीमुख से सत्संग में सुनेंगे- “अधर्म पर धर्म की विजय”

https://youtu.be/LNBgk0Q09lw

13. प्रश्नोत्तरी

बच्चों, अब तैयार हो जाइए प्रश्नोत्तरी के लिए ।

- गुरु मारपा ने मिलारेपा से इतनी कठोर सेवा क्यों करवाई?
- गुरु मारपा ने मिलारेपा को सत्संग दीक्षा कार्यक्रम से बाहर क्यों निकाल दिया?

- गुरु माता ने मिलारेपा की मदद करने के लिए क्या किया?
- मिलारेपा गुरु के द्वार को छोड़कर क्यों चला गया?
- ब्रह्मज्ञानी गुरु एक कुम्हार की तरह क्यों होते है?
- आज की कहानी से हमें क्या शिक्षा मिलती है?
- नवरात्रि का जागरण कैसा होना चाहिए ?
- दशहरा को क्या होता है?
- दशहरा को हमें क्या करना चाहिए?
- आज के सत्संग से हमें क्या सीख मिलती है?

14. पूर्णाहूति

<u>आरती</u> - सभी बच्चे अपने अपने स्थान पर आरती के लिए खड़े हो जाएंगे ।

नारायण नारायण नारायण नारायण ।

इसी के साथ हमारा आज का बाल संस्कार केंद्र संपन्न होता है अगले सप्ताह फिर मिलेंगे बच्चो एक नए ज्ञान वर्धक विषय के साथ । तब तक के लिए हरि ॐ !!!

<u>दीपज्योति एवं आरती</u> -

सभी बच्चे अपने अपने स्थान पर आरती के लिए खड़े हो जाएंगे।

प्रार्थना :

ॐ असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय,
मृत्योर्मामृतं गमय ॥
ॐ शान्ति शान्ति शान्तिः

हे ईश्वर, हमें असत्य से सत्य की ओर ले चलो, अन्धकार से प्रकाश की ओर ले चलो, मृत्यु से अमरता की ओर ले चलो।

प्रतियोगिता का उत्तर - ज्ञान-विज्ञान प्रतियोगिता प्रश्न का सही उत्तर है - b. ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

****